आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के रचयिता का परिचय

1. हम-तुम, सब मनुष्यमात्र विनाशी देह नहीं हैं।

2. हम सब मन-बुद्धि रूप ज्योतिबिंदु अविनाशी आत्मा अपनी-2 भरी-पूरी भृकुटि में विराजमान हैं; क्योंकि सिर्फ भृकुटि में ही गोली मारने से फौरन मृत्यु हो जाती है। आत्मा की यादगार बिंदी भी भृकुटि में ही लगाते हैं।

3. सूक्ष्म ज्योतिबिंदु आत्माओं का बाप परमपिता शिव भी अति सूक्ष्म ज्योतिबिंदु ही है।

4. सभी आत्माओं के बीच एकमात्र परमपिता शिव ही जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है। इसी कारण से वह शिव विदेही निराकारी है और त्रिकालदर्शी होने से गॉड इज़ वन, ट्रुथ इज़ गॉड कहा जाता है। वही 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' सृष्टि के आदि सतयुग के स्वर्गीय सत्य सनातन धर्म, दैवी राज्य की स्थापना और कलहयुगी झूठखंड के विनाशी 'सर्व धर्मान्' का परित्याग और धर्मखंडों का विनाश करा देता है।

5. इन दोनों स्थापना-विनाश के महान कार्यों की सम्पन्नता के लिए निराकार शिव गॉडफादर मनुष्य सृष्टि-वृक्ष के सारे ही धर्मों में परमप्रसिद्ध बीजरूप आदिपिता आदिदेव शंकर/आदम/एडम या जैनियों के आदिनाथ में गीता के 'प्रवेष्टुं' शब्दानुसार प्रवेश करता है और उसके द्वारा अन्यान्य देहधारी धर्मपिताओं की तरह ओरली सच्चा गीता-ज्ञान सुनाता तो है; परंतु कोई धर्मशास्त्र लिखता नहीं।

6. इसी सच्चे गीता-ज्ञान से ही सारे संसार में बड़ा भारी ज्ञान का रिवोल्युशन रूपी महाभारी महाभारत का परमप्रसिद्ध तृतीय विश्वयुद्ध हो जाता है। यह युद्ध कोई 16 कला संपूर्ण कृष्ण देवता के ज्ञान से नहीं होता। वह तो बच्चे के रूप में पूजा जाता है। मनुष्य को देवता बनाने वाला तो निराकार शिव भगवान ही है, जो कलातीत और कल्पांतकारी गाया जाता है। महाभारत के तृतीय विश्वयुद्ध के थोड़े

समय बाद ही रशियंस-अमेरिकंस रूपी यूरोपीय यादवों के बुद्धि रूपी पेट से निकले मिसाइलों रूपी मूसलों से सारे ही विनाशी- रशिया, चीन, अमेरिका, यूरोप आदि धर्मखंडों का अंतिम चतुर्थ विश्वयुद्ध द्वारा विनाश हो जाता है और सिर्फ अविनाशी धर्मखंड भारत ही बच जाता है, जहाँ निराकार गॉडफादर शिव विनाश से पहले ही परमधाम, सुप्रीमएबोड/सोल वर्ल्ड या अर्श से फर्श की पवित्र धरणी भारत में आकर एडम/आदम के एकव्यापी शरीर के द्वारा पैराडाइज़/जन्नत या स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाकी तो सभी धर्मपिताएँ अपना-2 देह रूपी रथ होने के कारण (स्व+रथी=)स्वार्थी होते हैं। एक ही शिव भगवान है जो सदाकाल ज्योतिबिंदु आत्मा की स्वस्थिति में स्थित रहने के कारण स्वर्ग बनाते हैं। बाकी तो सभी नर नरक ही बनाते हैं।

7. कृष्ण ने द्वापर के अंत में कोई महाभारत युद्ध कराकर पापी कलियुग की स्थापना नहीं की थी। खास भारत में तृतीय विश्वयुद्ध कराने और यूरोपीय यादवों में मूसलों या बम्बों का चतुर्थ विश्वयुद्ध कराने का एकमात्र टाइटलधारी तो 'कलातीत कल्याण कल्पांतकारी' हर-2 बम-2 शिवशंकर ही गाया हुआ है।

8. 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' का नाम बदलकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम डालने के लिए माउंट आबू से चलाई गई शिवबाबा की मु.ता.20.3.74 पृ.4 अंत में स्पष्ट आदेश इस प्रकार है- "गॉडफादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे, इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे। फिर बोर्ड में भी वह (प्र.ब्र.कु.) अक्षर हटाकर यह स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राई करके देखो। लिखो 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी'। इनकी एम-ऑब्जेक्ट यह है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारे म्युज़ियम, चित्रों आदि में भी चेन्ज होती जावेगी। फिर सब सेंटर्स पर लिखना पड़ेगा- 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी'।